



Published by:

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

- 1. For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.
- 2. This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.
- 3. These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.
- In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.
- 5. The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.
- 6. Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.
- 7. The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.
- 8. All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.
- 9. All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

<u>Content</u>

राजनीतिक सिद्धान्त का परिचय (Introduction to Political Theory)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June-2023 (Solved)	1-2
Question Paper—December-2022 (Solved)	1
Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved)	1
Question Paper–Exam Held in February-2021 (Solved)	1-4
Sample Question Paper–1 (Solved)	1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
1. राजनीति क्या	है? (What is Politics?)	1
2. राजनीतिक सि	नद्धांत क्या है? (What is Political Theory?)	
3. स्वतंत्रता (Lib	erty)	
4. समानता (Eq	uality)	
5. न्याय (Justic	;e)	
6. अधिकार (Ri	ghts)	
7. लोकतंत्र (De	mocracy)	
8. जेंडर (Gend	er)	
9. नागरिकता (C	itizenship)	

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
10. नागरिक समा	ज और राज्य (Civil Society and State)	110
	म आर्थिक विकास y and Economic Development)	121
12. स्वतंत्रता बना	म नियंत्रण (Liberty Vs Control)	
	भाव बनाम निष्पक्षता का सिद्धान्त liscrimination Vs discrimination principle)	139
14. परिवार, कानू	न और राज्य (Family, Law and State)	



QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

राजनीतिक सिद्धांत का परिचय (Introduction to Political Theory)

(B.P.S.C.-131

समय : 3 घण्टे |

| अधिकतम अंक : 100

नोट: प्रत्येक भाग से कम-से-कम दो प्रश्न चुनते हुए किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भाग-I

प्रश्न 1. लोकतंत्र और आर्थिक विकास संगत (compatible)हैं या नहीं, इस पर अपना दृष्टिकोण दीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-11, पृष्ठ-125, प्रश्न 2

प्रश्न 2. स्वतंत्रता और नियंत्रण (Censorship) के बीच संबंध की जांच कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-130, 'स्वतंत्रता और नियंत्रण (सेंसरशिप) के मध्य संबंध'

प्रश्न 3. रक्षात्मक भेदभाव (Protective Discrimination) की अवधारणा की चर्चा कीजिए।

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-13, पृष्ठ-139, 'रक्षात्मक भेदभाव की संकल्पना'

प्रश्न 4. राजनीतिक सिद्धांत में परिवार और राज्य के संबंधों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-149, 'राजनीतिक सिद्धांत में परिवार और राज्य का संबंध'

भाग-II

प्रश्न 5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए-

(क) नागरिक समाज (Civil Society)

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय–10, पृष्ठ–112, 'नागरिक समाज की संकल्पना'

(ख) वैश्विक नागरिकता (Global Citizenship)

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-9, पृष्ठ-103, प्रश्न 5

प्रश्न 6. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए-

(क) पितृसत्ता (Patriarchy)

उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-8, पृष्ठ-92, प्रश्न 3

(ख) बहुलवादी लोकतंत्र (Pluralist Democracy)

उत्तर-दोनों के माध्यम से सक्रिय होती है। उसने अनेक ऐसे समुदायों का हवाला दिया है जो सरकार के नीति-निर्धारण को प्रभावित करते हैं, जैसे—व्यापारी घराने और उद्योगपति, सौदागर, श्रमिक संगठन, किसान संगठन, उपभोक्ता, मतदाता इत्यादि। ऐसा नहीं है कि उनकी पूरी कार्यसूची क्रियान्वित हो ही जाती है। सारे समूह समान रूप से सशक्त नहीं होते और अनेक समूह अपनी मनोनुकूलनीतियों को मनवाने की अपेक्षा प्रतिकूलनीतियों की रोकथाम में ज्यादा प्रभावी होते हैं।

बहुलवादी सिंद्धान्त के विरुद्ध उठाई जाने वाली आपत्तियों में निम्नलिखित प्रमुख हैं–

 बहुलवादी सिद्धान्त इस मान्यता पर आधारित है कि अलग-अलग समूहों के बीच हितों के टकराव के फलस्वरूप उन हितों अथवा उनके अंश को प्रोत्साहन मिलता है, जो स्वीकार किए जाने के योग्य होते हैं। लेकिन कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि इस टकराव के कारण यथास्थिति अथवा गत्यावरोध के हालात बन जाते हैं। कभी-कभी तो और बदतर स्थिति हो जाती है, जब एक समूह-विशेष अपनी संपूर्ण कार्य सूची को मनवा लेता है, जिसके फलस्वरूप अन्य समूह आक्रोशित हो उठते हैं।

 2. बहुलवादी सिद्धान्त का सूत्र-वाक्य है कि लोग अपने हितों की सीधे तौर पर पूर्ति चाहते हैं, लेकिन यह सर्वथा और सर्वदा सत्य नहीं होता। लोग राष्ट्रवादी अथवा अन्य अभिप्रेरणाओं से भी संचालित हो सकते हैं।

3. माइकल मावगोलिस के अनुसार बहुलवादी सिद्धान्त समाज के संसाधनों को संवर्द्धित या पुनर्वितरित करने के तरीके खोजने में अक्षम है। नतीजतन, निम्नजातियों, महिलाओं, आदिवासियों तथा परंपरागत रूप से समाज के अन्य वंचित तबकों को साधन संपन्न वर्गों की भांति राजनीति में सहभागिता के समान अवसर नहीं मिल पाते।

 मावगोलिस का यह भी कहना है कि बहुलवादियों के पास यथोचित आर्थिक और पर्यावरणीय मूल्य पर सामाजिक समानता और विकास की कोई योजना नहीं है।

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

2 / NEERAJ : राजनीतिक सिद्धांत का परिचय (JUNE-2023)

प्रश्न 7. संश्लेषण (Synthesis) की परिभाषा के रूप में न्याय की जांच कीजिए।

उत्तर – न्याय को अक्सर संश्लेषण के शब्द के रूप में वर्णित किया जाता है, जिसका अर्थ है कि यह एक अवधारणा है जो विभिन्न अन्य नैतिक और नैतिक सिद्धांतों और मूल्यों को संश्लेषित या एक साथ लाती है। न्याय को अक्सर एक मौलिक नैतिक मूल्य के रूप में समझा जाता है, जो कई दार्शनिक और धार्मिक परंपराओं का केंद्र है, और यह निष्पक्षता, समानता और अधिकारों जैसी अन्य अवधारणाओं से निकटता से संबंधित है।

न्याय को संश्लेषण के शब्द के रूप में समझने का एक तरीका निष्पक्षता से इसका संबंध है। निष्पक्षता को अक्सर न्याय के एक प्रमुख घटक के रूप में देखा जाता है, क्योंकि इसमें व्यक्तियों या समूहों के साथ निष्पक्ष और निष्पक्ष तरीके से व्यवहार करना शामिल है, और जो उनकी आवश्यकताओं और परिस्थितियों को ध्यान में रखता है। निष्पक्षता की तुलना अक्सर पक्षपात या भेदभाव से की जाती है, जिसमें कुछ व्यक्तियों या समूहों के साथ दूसरों की तुलना में अधिक अनुकूल या अनुचित व्यवहार करना शामिल होता है।

न्याय को संश्लेषण के शब्द के रूप में समझने का एक और तरीका समानता के साथ इसका संबंध है। समानता को अक्सर न्याय के प्रमुख सिद्धांत के रूप में देखा जाता है, क्योंकि इसमें सभी व्यक्तियों या समूहों के साथ समान व्यवहार करना और यह सुनिश्चित करना शामिल है कि उनके पास समान अधिकार और अवसर हैं। समानता कई रूप ले सकती है, जैसे राजनीतिक, सामाजिक या आर्थिक समानता, और इसे अक्सर न्यायपूर्ण और समावेशी समाज को बढ़ावा देने के लिए एक प्रमुख सिद्धांत के रूप में देखा जाता है।

न्याय को अक्सर अधिकारों के संबंध में संश्लेषण के शब्द के रूप में भी देखा जाता है। अधिकारों को अक्सर कानूनी या नैतिक अधिकारों के रूप में समझा जाता है जो व्यक्तियों या समूहों के पास होते हैं और जो कानून या नैतिक मानदंडों द्वारा संरक्षित होते हैं। अधिकारों में जीवन का अधिकार, स्वतंत्रता और खुशी की खोज जैसी चीजें शामिल हो सकती हैं, साथ ही कानून के तहत शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और उचित उपचार का अधिकार जैसे अधिक विशिष्ट अधिकार भी शामिल हो सकते हैं।

न्याय एक जटिल और बहुआयामी अवधारणा है जो निष्पक्षता, समानता और अधिकारों जैसे कई अन्य नैतिक और नैतिक सिद्धांतों और मूल्यों को एक साथ लाती है। इसे अक्सर एक मौलिक नैतिक मूल्य के रूप में देखा जाता है, जो कई दार्शनिक और धार्मिक परंपराओं का केंद्र है और यह एक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज को बढावा देने के लिए आवश्यक है।

प्रश्न 8. असमानता के उदार औचित्य पर चर्चा कीजिए। उत्तर-संदर्भ-देखें अध्याय-4, पृष्ठ-39, 'असमानता के पक्ष में उदारवादी तर्कसंगतता' तथा पृष्ठ-45, प्रश्न 4

www.neerajbooks.com



राजनीतिक सिद्धान्त का परिचय (Introduction to Political Theory)

राजनीति क्या है? (What is Politics?)

 $\widetilde{(1)}$

परिचय

'राजनीति' शब्द का उद्भव ग्रीक शब्द 'पॉलिस' से हुआ है, जिसका अर्थ है-'नगर और राज्य'। प्राचीन यूनानियों की राजनीति की अवधारणा राजनीतिक सोच और भावना से ऊपर नागरिकता पर बल देती है। राजनीतिक अध्ययन के सन्दर्भ में आवर्तक चक्र का सिद्धांत बताता है कि सामान्यतया तानाशाही व्यवस्था बिगडकर अत्याचार का रूप ले लेती है अत्याचारों को अभिजात वर्ग द्वारा उखाड़ फेंका जाता है और जिन्हें आबादी का शोषण करने वाले कुलीन वर्गों में बदल जाता है, जो कि बाद में लोकतंत्रों द्वारा उखाड़ फेंके जाते हैं, और बदले में भीड़ के शासन की असहनीय अस्थिरता में बदल जाते हैं, जिसके कारण कुछ शक्तिशाली नेता खुद को राजा बना लेते हैं और यह चक्र फिर से शुरू होता है। ग्रीक राजनीतिक अध्ययनों ने संविधान को महत्व दिया और मानव व्यवहार एवं राजनीतिक संघों के बीच संबंधों के बारे में सामान्यीकरण किया। अरस्तू के विचार से लोकतंत्र का कुछ तत्व सबसे अच्छे संतुलित संविधान के लिए आवश्यक है, जिसे वे एक 'राज्यतंत्र' कहते हैं।

प्राचीन रोम की राजनीति मानव द्वारा संचालित गतिविधि का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, जिसमें शक्ति के व्यवहार को सीमित किया गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

राजनीति एक व्यावहारिक गतिविधि के रूप में राजनीति हमारे जीवन के सभी पहलुओं से संबंधित है। यह सभी समूहों और संस्थानों में पायी जाती है, इसके बावजूद राजनीति व्यावहारिक गतिविधि के रूप में मानवीय संभावनाओं की व्यवस्थापन की समस्या से जूझ रही है। ऐसे संबंध, संस्थान व

संरचनाएँ जो जीवन की उत्पत्ति व पुनरुत्पत्ति से संबंधित हैं, उनमें किसी न किसी रूप में राजनीति का योगदान रहता है। इसके अतिरिक्त सामूहिक समस्याओं और उनके विकास के मूल में भी राजनीति निहित है।

राजनीति को परिभाषित करना कठिन है

राजनीति की स्पष्ट परिभाषा देना कठिन है। वह गतिविधि, जिसके द्वारा समूह अपने सदस्यों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करते हैं एवं इसके माध्यम से सामूहिक निर्णय लेते हैं, को राजनीति कहा जा सकता है, किंतु इस परिभाषा में अनेक महत्त्वपूर्ण बिंदु निहित हैं।

राजनीति की प्रकृति

पारस्परिक चर्चा व वाद-विवादों के माध्यम से किसी समूह में पारस्परिक चर्चा को उचित रूप प्रदान करना राजनीति की मुख्य प्रकृति है। अत: संचार राजनीति का केंद्र बिंदु है। राजनीति की आवश्यकता सामूहिकता में निहित है। उदाहरण के लिए, एक परिवार द्वारा चर्चा करना कि आगामी छुट्टियाँ कैसे मनानी हैं या किसी देश द्वारा निर्णय लेना कि युद्ध करना है या नहीं। ये सभी निर्णय सामूहिक रूप से लिए जाते हैं, क्योंकि ये उस समूह के सदस्यों को प्रभावित करते हैं।

राजनीति : मानव स्थिति की एक अपरिहार्य विशेषता

'राजनीति' शब्द का प्रयोग अक्सर सार्वजनिक हित की आड़ में निजी लाभ की खोज के लिए किया जाता है, किंतु इन आलोचनाओं के बावजूद राजनीति मानव व्यवहार की एक अपरिहार्य विशेषता है। अरस्तू के अनुसार मनुष्य के लिए राजनीति एक आवश्यक मानवीय गतिविधि है, जो मनुष्य को शेष प्रजातियों से अलग करती है। राजनीतिक समुदाय में भागीदारी के माध्यम से ही लोग अपने स्वरूप को व्यक्त करते हैं एवं किसी निर्णय पर पहुँचते हैं।

www.neerajbooks.com

2 / NEERAJ : राजनीतिक सिद्धान्त का परिचय

राजनीति क्या है?

कुछ लोग समझते हैं कि राजनीति राजनेताओं की गतिविधियों से संबंधित हैं, किंतु इसके आयाम बाहुल्य हैं। यदि किसी के अनुसार राजनीति सत्ता के लिए अपने संघर्ष में नेताओं की पारस्परिक प्रतिद्वंद्विता पर ध्यान केंद्रित करती है, तो किसी के अनुसार राजनीति राजनीतिक शक्ति के वितरण से संबंधित है, लेकिन शक्ति मानव में सन्निहित है। जब कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा दूसरों पर थोपे, तो इसे शक्ति की संज्ञा दी जाती है। इससे नेतृत्व की संकल्पना का उद्गम होता है। अत: जरूरी नहीं कि राजनीति सिर्फ संसार का विषय हो या केवल नेतृत्व गतिविधियों से संबंधित हो। यह वास्तव में हर उस स्थिति का संदर्भ, जहाँ नेतृत्व का अधिकार हासिल करने या बनाए रखने के प्रयास में सत्ता की संरचना और संघर्ष हो, राजनीति है। इसके कई स्वरूप हैं, जैसे–विश्वविद्यालय की राजनीति, यौन राजनीति, नस्लभेद की राजनीति आदि।

राज्य क्या है?

अब सवाल यह आता है कि राज्य क्या है? राज्य के विभिन्न रूप हैं, जो महत्वपूर्ण तरीकों द्वारा एक-दूसरे से भिन्न हैं, जैसे– ग्रीक नगर का आधुनिक राष्ट्रवादी राज्य, ब्रिटेन का समकालीन उदारवादी लोकतांत्रिक राज्य, हिटलर का फासीवादी राज्य आदि। राजनीति के संदर्भ में राज्य का अध्ययन करना आवश्यक है। राज्य : राजनीतिक संस्थानों/सामाजिक संदर्भ की व्याख्या पर अंतर

राज्य की संरचना राजनीतिक संस्थानों से अलग है। राज्य की संरचना बहुत ही अलग तरह के सामाजिक ढांचे का काम करती है, जो राज्य की प्रकृति और उद्देश्यों को बड़े पैमाने पर प्रभावित और सेवा करने के लिए प्रेरित करता है। राज्य के विभिन्न रूप हैं, लेकिन इसका अर्थ केवल विशालकाय ढांचे से नहीं है। उदाहरण के लिए, राज्य और सरकार समान नहीं हैं, बल्कि राज्य विभिन्न तत्वों की एक जटिलता है, जिनमें से सरकार का रूप एक है। प्रतीकात्मक रूप से राज्य के सदन में कई भवन होते हैं और उनमें से एक पर सरकार का अधिकार होता है।

राज्य पर राल्फ मिलिबैंड के विचार

राल्फ मिलिबैंड ने अपनी पुस्तक 'द स्टेट इन कैपिटलिस्ट सोसाइटी' में उन विभिन्न तत्त्वों का उल्लेख किया है, जो राज्य के गठन में मिलकर कार्य करते हैं। पहला तत्व सरकार, दूसरा तत्व प्रशासनिक सेवा या नौकरशाही है। तीसरे तत्व में सैन्य व पुलिस और चौथे तत्व में न्यायपालिका जैसी संवैधानिक प्रणाली सम्मिलित होती है। पाँचवें तत्त्व में स्थानीय सरकार की इकाइयाँ शामिल हैं, जिनमें से कुछ संघीय प्रणालियाँ सरकारी हस्तक्षेप से स्वतंत्र होती हैं। अंतत: छठे तत्व के रूप में प्रतिनिधि विधानसभाओं व संसद को जोड़ा जा सकता है। अन्य तत्वों में राजनीतिक दलों को भी शामिल किया जा सकता है, किंतु ये उदार लोकतंत्र में राज्यतंत्र का हिस्सा नहीं हैं। दल प्रतिनिधि सभा में राजनीतिक स्पष्ट भूमिका निभाते हैं।

राज्य के विभिन्न रूप

राष्ट्र-राज्य आधुनिक राज्य का स्वरूप है, जो ऐतिहासिक प्रक्रिया के माध्यम से अस्तित्व में आया है। इसकी उत्पत्ति धर्म, राजसत्ता, युद्ध, संपत्ति, राजनीतिक चेतना और तकनीकी विकास जैसे कारकों के द्वारा हुई है। आदिवासी राज्य, प्राच्य साम्राज्य, ग्रीक शहर राज्य, रोमन विश्व साम्राज्य, सामंती राज्य और अंतत: आधुनिक राष्ट्र-राज्य, ये सभी राज्य के विभिन्न रूप हैं, जो ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप उदित हुए।

राज्य का प्रारंभिक उदारवादी दृष्टिकोण नकारात्मक था, क्योंकि यह व्यक्तिगत मामलों में समानकारी नहीं था। उदारवादी दृष्टिकोण समय के साथ बदल गया है। आधुनिक 20वीं सदी का उदारवाद कल्याणकारी राज्य से संबंधित है। राज्य की मार्क्सवादी अवधारणा राज्य को वर्ग के एक साधन के रूप में मानती है और सर्वहारा क्रांति के माध्यम से एक वर्गविहीन और राज्यविहीन समाज की स्थापना करना चाहती है। राज्य पर नारीवादी दृष्टिकोण के भी दो पक्ष हैं–उदारवादी और कट्टरपंथी। उदारवादी नारीवादी जहाँ महिलाओं के लिए कल्याणकारी योजनाओं का विस्तार करने और महिलाओं के लिए समानता के अधिकार के पक्षधर है, वहीं कट्टरपंथी महिलाओं की असमान स्थिति के लिए एक परिवार में श्रम के असमान वितरण को दोष देते हैं।

राजनीति एक व्यवसाय के रूप में

वेबर के अनुसार किसी नियत कार्य द्वारा राज्य का निर्धारण नहीं हुआ है। विशिष्ट साधनों द्वारा राज्य को नियोजित किया गया। वेबर के अनुसार राज्य एक मानव समुदाय है, जो किसी दिए गए क्षेत्र के भीतर भौतिक बल के वैध उपयोग के एकाधिकार का सफलतापूर्वक दावा करता है या भौगोलिक क्षेत्र, जिसे राज्य नियंत्रित करता है और नियंत्रण बनाए रखने के लिए भौतिक बल का उपयोग करता है। राजनीति का अध्ययन राज्य और समाज के संबंधों से जुड़ा है। यह समाज में सत्ता के वितरण का अध्ययन है।

शक्ति का वैध उपयोग

राज्य के संदर्भ में शक्ति के वैध उपयोग का विचार अध्ययन का विषय है। दबाव शक्ति का एक रूप है, जो कई प्रकार का हो सकता है। उदाहरण के लिए, एक अध्यापक अपने विचार छात्रों पर थोपने के लिए शक्ति का प्रयोग करता है। हालांकि यह छात्रों की इच्छा के विरुद्ध नहीं होता। इसी प्रकार सत्ता के सभी धारक उनके शासन के अधीन सभी लोग की सहमति प्राप्त करने का प्रयास करते हैं और यह प्रयास शक्ति की वैधता की प्रक्रिया का गठन करता है। अत: वैध प्राधिकरण एक ऐसा शक्ति-संबंध है, जिसमें सत्ताधारक के पास आज्ञा का अधिकार होता है और शक्ति का विषय एक आज्ञाकारिता का पालन करना, क्योंकि लोगों को लगता है कि ऐसा करना सही है।

वैधीकरण पर मैक्स वेबर के विचार

मैक्स वेबर तीन प्रकार के वैधीकरण का उल्लेख करते हैं। पहला पारंपरिक वर्चस्व या वैधता, जो शक्ति को उचित मानता है, क्योंकि सत्ता के अधिकारी परंपरा के बल पर व्यक्तिगत रूप से या अपने परिवार विशेष में अधिकारों का संरक्षण करते हैं। दूसरा प्रकार करिश्माई वैधता है, जैसे–किसी नेता द्वारा प्रदर्शित करिश्माई व्यक्तिगत गुण, जिससे वे लोगों को शक्तिधारक की आज्ञा मानने के लिए विवश कर देते है। अंत में तीसरा प्रकार कानूनी तर्कसंगतता से संबंधित है। इसके अंतर्गत समाज के लोग विशिष्ट नियमों का पालन करने के लिए कटिबद्ध होते हैं। उपर्युक्त किसी भी प्रणाली में शक्तिधारक अपनी शक्ति को वैध शक्ति के रूप में स्वीकार करना व करवाना चाहते हैं। जब लोग स्वेच्छा से नियमों का पालन करते हैं, तो उस राजनीतिक प्रणाली की स्थिरता सुनिश्चित हो जाती है।

वैधता : राजनीतिक विज्ञान का केंद्रीय सरोकार

सी. राइट मिल्स के लिए वैधता की संकल्पना राजनीति विज्ञान की प्रमुख अवधारणाओं में से एक है। किसी भी राजनीतिक प्रणाली के अध्ययन में यह महत्त्वपूर्ण है कि लोग मौजूद शक्ति संरचना को किस सीमा तक स्वीकारते हैं। वे विधियाँ, जिनके द्वारा किसी राजनीतिक प्रणाली की शक्ति को वैध बनाया जाता है, शक्ति के वास्तविक औचित्य के लिए महत्वपूर्ण हैं। अस्थिर प्रणालियों में शासन की वैधता पर प्रश्नचिह्न लगता है और ऐसी स्थिति में अक्सर एक शासन को बल पर निर्भर रहना पड़ता है। बल का अत्यधिक व अनुचित प्रयोग अक्सर क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए उत्तददायी होता है।

अवैधीकरण की प्रक्रिया

जब किसी संगठन के नियंत्रित विचार निरंतर आलोचना का विषय होते हैं, तो इसे अवैधीकरण की प्रक्रिया भी कहा जाता है। अवैधीकरण की प्रक्रिया के फलस्वरूप होने वाले आंदोलन पुरानी व्यवस्था की नींव को कमजोर करते हैं। एक प्रमुख उदाहरण वाइमन गणराज्य का है, जब जर्मन आबादी के बड़े भाग ने लोकताांत्रिक शासन में विश्वास खो दिया और कम्युनिस्ट विकल्प के डर से हिटलर की नेशनल-सोसाइटी पार्टी को समर्थन दिया, जिसके परिणामस्वरूप गणतंत्र का पतन हो गया। अत: कोई भी राजनीतिक प्रक्रिया तब अपनी स्थिरता खो देती है, जब वैधीकरण का स्थायित्व खोने लगता है। अंतत: यह स्पष्ट है कि वैधता एवं अवैधता दोनों प्रक्रियाएँ किसी भी राजनीतिक प्रणाली की विशेषताएँ हैं। वैध विचारों को सामाजिक संपर्क, जैसे–प्रेस, टेलीविजन आदि के माध्यम से फैलाया जाता है।

जोड्तोड् की स्वीकृति या सहमति

सत्ता का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष लोगों की चेतना को प्रभावित करने एवं उसे अपने अनुसार ढालने की क्षमता से संबंधित है, जिससे लोग वैकल्पिक संभावनाओं से अवगत नहीं होते और

राजनीति क्या है? / 3

मौजूदा सत्ता को सहमति प्रदान करते हैं। हम सभी जनमत के वातावरण से प्रभावित हैं, जो ऐसे स्थिति में ले जाता है, जहाँ दिमाग काम करना बंद कर देता है। यह वातावरण छलयोजना द्वारा एक अखंड लोकप्रिय मानसिकता बनाने के लिए जानबूझकर बनाया जाता है। **सी. राइट मिल्स** इसे हेरफेर या चालाकी या शक्तिहीन के लिए अज्ञात शक्ति के रूप में परिभाषित करते हैं। मार्क्सवादी भाषा में इसे जोड़तोड़ की सहमति वाली राजनीति कहा जाता है। अत: यह निष्कर्ष निकलता है कि राजनीतिक पसंद का महत्व और स्वतंत्र रूप से उस विकल्प को व्यक्त करने की क्षमता को समाप्त नहीं किया जा सकता। हालांकि लोगों की इच्छाएँ विभिन्न कारकों द्वारा प्रतिबंधित हैं।

राज्य के प्रशासन के कार्मिक : अभिजात वर्ग

राज्य उन लोगों द्वारा संचालित संस्थानों का एक समूह है, जिनके विचार और बुनियादी दृष्टिकोण बड़े पैमाने पर उनके मूल और सामाजिक वातावरण से प्रभावित हैं। राजनीतिक प्रणाली की प्रक्रिया को अभिजात वर्ग के सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में अच्छी तरह से समझा जा सकता है। अभिजात वर्ग उन सत्तारूढ़ अल्पसंख्यकों को दर्शाता है, जो राज्यतंत्र को नियंत्रित करते हैं। नेतृत्व की कम गुणवता के फलस्वरूप राजतंत्र पूर्णतया नौकरशाही के हाथों में आ जाता है। मार्क्सवादी सिद्धांत अभिजात वर्ग की प्रकृति को महत्व नहीं देते थे। इसका अर्थ यह है कि अभिजात वर्ग द्वारा राजनीतिक गतिविधियों का संचालन कम होता था। सामान्यतया संरचनात्मक सिद्धांत का आधार सरकार के सामाजिक ढांचे से उपजी बाधाओं पर बल देना है, जिसके अंतर्गत सरकार कार्य करती है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. एक व्यवहारिक गतिविधि के रूप में राजनीति क्या है?

उत्तर-राजनीति विषय का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। इसकी सीमा को निश्चित मापदण्ड द्वारा नापा नहीं जा सकता। यह अभी भी विकसित अवस्था में है। विभिन्न विद्वानों ने इसके विषय में विभिन्न मत दिए हैं, जो आपस में मेल नहीं खाते हैं। किसी विद्वान ने इसका वर्णन पेशे के रूप में किया है, तो किसी ने व्यावहारिक रूप में। जो विद्वान व्यावहारिक गतिविधि के रूप में राजनीति का वर्णन करते हैं, उनके अनुसार राजनीति मानव संभावनाओं के संगठन पर संघर्ष है। इस रूप में, यह शक्ति से सम्बन्धित है। यह उन संसाधनों से जुड़ी हुई है, जो इसकी क्षमता को प्रभावित करते हैं और उन शक्तियों के विषय में है, जो इसके प्रयोग को आकार देते हैं। राजनीति निजी और सार्वजनिक जीवन से जुड़े सभी समूहों, संस्थाओं और समाजों में पाई जाती है। इसकी उन समस्त सम्बन्धों, संस्थाओं और संरचनाओं में अभिव्यक्ति होती है, जो सामाजिक जीवन के उत्पादन और पुनः उत्पादन से सम्बन्धित होते हैं।

www.neerajbooks.com

4 / NEERAJ : राजनीतिक सिद्धान्त का परिचय

इस प्रकार, व्यावहारिक गतिविधि के रूप में राजनीति मानव जीवन के सभी पक्षों की रचनाओं व उनसे सम्बन्धित शर्तों से जुड़ी हुई है।

प्रश्न 2. राजनीति की महत्त्वपूर्ण प्रकृति पर चर्चा करें।

उत्तर-राजनीति एक सामूहिक गतिविधि है, जिसमें वे लोग सम्मिलित होते हैं, जो आम सदस्यता स्वीकार करते हैं या कम से कम साझा निर्णय को स्वीकार करते हैं। संचार राजनीति का मुख्य केंद्र है। एक समूह के लिए राजनीतिक निर्णय आधिकारिक नीति बन जाते हैं, जो सदस्यों को उन निर्णयों को मानने के लिए बाध्य करते हैं। सामाजिक प्राणी के रूप में राजनीति हमारे जीवन का हिस्सा है।

कुछ लोगों के अनुसार 'राजनीति' वह है, जो व्यक्ति समाचार पत्र, पत्रिकाओं में पढ़ता और टेलीविजन पर देखता है। दरअसल 'राजनीतिक' और 'राजनीति' शब्द राजनीतिक गतिविधियों से सम्बन्धित होता है। विद्वान **मारंग्येथ्रू** के अनुसार, "राजनीति शक्ति के लिए संघर्ष है।" **हेरोल्ड लासवेल** के अनुसार, "राजनीति प्रभावों और प्रभावित करने वाले तत्त्वों का अध्ययन करती है। राजनीति प्राथमिक रूप से कौन, कब और कैसे पाता है, से सम्बन्धित है।"

राजनीति विज्ञान के आधुनिक विद्वानों के अनुसार राजनीति वह गतिविधि है, जो प्रभाव व प्रभावित तत्त्वों, नीति-निर्माण की प्रक्रिया तथा शक्ति के लिए संघर्ष से सम्बन्ध रखती है। 'राजनीति' के विषय में आर.एन. वाल लिखते हैं कि "राजनीति वह गतिविधि है, जो राजनीतिक विवाद, समझौते, नीति-निर्माण, शक्ति और सत्ता से सम्बन्ध रखती है।"

उपर्युक्त तत्त्वों व विद्वानों की परिभाषा से पता चलता है कि राजनीति राज्य शासन संबंधी सभी प्रकार के क्रियाकलापों और गतिविधियों से सम्बन्धित है।

राजनीति की आवश्यक प्रकृति निम्नलिखित है—

 राजनीति एक सामूहिक गतिविधि है–राजनीति एक सामूहिक गतिविधि है। यह उन लोगों को अपने में शामिल करती है, जो साधारण सदस्यता या कम-से-कम एक समान भाग्य का सहयोगी होना स्वीकार करते हैं।

2. राजनीति शक्ति के लिए संघर्ष-राजनीति वास्तव में शक्ति के लिए संघर्ष है। राज्य के अन्दर राजनीतिक दल और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व के राष्ट्र शक्ति के लिए संघर्ष करते दिखाई पड़ते हैं। *इस विषय में*, मैक्स वेबर का कहना है कि राजनीति शक्ति के लिए संघर्ष है।

3. यह मानव जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है–राजनीति मानव–जीवन के सभी पहलुओं–राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक आदि को प्रभावित करती है।

4. राजनीति सामाजिक जीवन का एक अभिन्न अंग है– राजनीति सामाजिक जीवन का एक अभिन्न अंग है। इसको अलग नहीं किया जा सकता। एक जगह पर अरस्तू ने भी लिखा है कि "मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है।" मनुष्य के इसी स्वभाव ने राज्य की उत्पत्ति की। राजनीति मनुष्य के सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक पक्षों को नियमित करती है।

5. राजनीति विचारों की प्रारम्भिक विविधता को स्वीकार करती है–मनुष्य समूह में रहता है। विभिन्न विषयों पर वाद-विवाद करता है और लोग अपने विचार एक-दूसरे के सामने प्रस्तुत करते हैं। राजनीति लोगों के बीच विभिन्न विषयों पर चल रहे वाद-विवाद तथा उत्पन्न मतभेदों के बीच सामंजस्य स्थापित करती है।

6. राजनीति राज्य और सरकार से सम्बन्धित होती है– राजनीति एक गतिविधि है, जिसका सम्बन्ध राज्य-शासन से सम्बन्धित क्रियाकलापों और गतिविधियों से होता है। राजनीति देश का शासन चलाने है और नीति-निर्माण करने वाली सरकार से सम्बन्ध रखती है।

7. राजनीति सत्ता का अध्ययन है—डेविड ईस्टन के अनुसार, "राजनीति सत्ता और इससे सम्बन्धित निर्धारित मूल्यों के अध्ययन से सम्बन्ध रखती है।"

प्रश्न 3. 'राजनीति' शब्द से आप क्या समझते हैं?

उत्तर – राजनीति का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना राज्य का। 'राजनीति' शब्द की उत्पत्ति भी वहीं से मानी जाती है, जहां से राज्य की। वास्तव में, राजनीति ग्रीक शब्द 'पोलिस' (Polis) से बना है, जिसका अर्थ 'नगर-राज्य' होता है। प्राचीन यूनान में छोटे-छोटे नगर-राज्य हुआ करते थे, जो व्यक्ति नगर-राज्य के कार्यों में हिस्सा लेते थे, उन्हें नागरिक अधिकार प्राप्त थे। ग्रीक दार्शनिकों के अनुसार व्यक्ति अपना सम्पूर्ण विकास राज्य के अन्दर ही रहकर कर सकता है।

राजनीति के सन्दर्भ में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं। कुछ विद्वानों के अनुसार यह शक्ति के लिए संघर्ष से सम्बन्धित पहलुओं का अध्ययन करने वाला विषय है, तो कुछ के अनुसार यह राज्य और सरकार से सम्बन्धित है।

कुछ प्रमुख विद्वानों ने राजनीति को परिभाषित करने की कोशिश की है, जो इस प्रकार है–

- मैक्स वेबर के अनुसार, "राजनीति का अर्थ, सत्ता में भागीदारी के लिए प्रयास करना या राज्यों के अन्तर्गत सत्ता के विभाजन या राज्य के अन्तर्गत समूहों के बीच राजनीति को प्रभावित करने का प्रयास करना है।"
- मारंग्येथू के अनुसार, "राजनीति शक्ति के लिए संघर्ष है।"
- कैटलिन के अनुसार, "राजनीति संगठित मानव समाज के राजनीतिक पक्षों का अध्ययन करती है।"
- हेरोल्ड लासवेल के अनुसार, "राजनीति प्रभाव और प्रभावित करने वाले का अध्ययन है। राजनीति प्राथमिक रूप से कौन, क्या, कब और कैसे पाता है, से सम्बन्धित है।"

निष्कर्षत: उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि राजनीति राज्य और शासन-सत्ता से सम्बन्धित सभी प्रकार के क्रियाकलापों व गतिविधियों से सम्बन्धित होती है।